टिप्पणी

3

लेखांकन परिपाटियाँ एवं मानक

पिछले पाठ में आपने लेखांकन अवधारणाओं का अध्ययन किया। यह लेखांकन अवधारणाएँ हैं : व्यावसायिक इकाई, मुद्रा माप, चालू व्यापार, लेखांकन अवधि, लागत, द्विपक्षीय, वसूली, उपार्जन एवं मिलान। यह अवधारणाएँ अथवा मान्यताएँ अथवा सिद्धान्त सभी लेखांकन क्रियाओं के लिए कार्यात्मक नियम हैं।

आप किसी व्यावसायिक इकाई में जाएँ। उनसे पूछें कि वह बिना बिके माल का मूल्यांकन किस आधार पर करते हैं? आप पाएँगे कि वह बिना बिके माल के स्टाक के मूल्याँकन के लिए एक समान विधि का प्रयोग करते हैं। आप उनसे पूछ सकते हैं कि वह बिना बिके माल के स्टॉक का मूल्याँकन लागत अथवा बाजार मूल्य जो भी कम है पर क्यों करते हैं जबकि बाजार मूल्य लागत मूल्य से अधिक है। शायद व्यवसायी उत्तर देगा कि हम तो वर्षों से इसका अनुसरण कर रहे हैं क्योंकि यही व्यवसाय की परिपाटियाँ, रीति, अथवा व्यवहार हैं। लेखांकन में कई परिपाटियाँ अथवा व्यवहार है जिनका हम लेखा पुस्तकों में लेन-देनों का अभिलेखन करते समय पालन करते हैं। इनके अतिरिक्त इन्स्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउन्टेंट्स ऑफ इण्डिया (ICAI), जो कि देश में लेखांकन नीतियों के मानकीयकरण के लिए मुख्य नियामक संस्था है, जिसने लेखांकन पद्धतियों में समनुरूपता लाने के लिए समय-समय पर कई लेखांकन मानकों की घोषणा की है। इस पाठ में हम लेखांकन परिपाटियों एवं मानकों का विस्तार से अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप :

- लेखांकन परिपाटी का अर्थ समझा सकेंगे;

टिप्पणी

- लेखांकन परिपाटियों जैसे कि समनुरूपता, पूर्ण प्रकटीकरण, सारता एवं रूढ़िवादिता का अर्थ बता सकेंगे तथा उनके महत्व को समझा सकेंगे;
- सामान्य रूप से स्वीकृत लेखांकन सिद्धान्त (GAAP) शब्द का अर्थ बता सकेंगे:
- लेखांकन मानक अवधारणा को समझा सकेगें तथा इंस्टिट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स ऑफ इण्डिया द्वारा जारी विभिन्न लेखांकन मानकों को गिनवा सकेंगे।

3.1 लेखांकन परिपाटियों का अर्थ

लेखांकन परिपाटी से अभिप्राय उन सामान्य पद्धतियों से है जिनका व्यावसायिक इकाइयों की लेखांकन सूचना के अभिलेखन एवं प्रस्तुतीकरण में विश्व भर में पालन किया जाता है। समाज के रीति-रिवाज के समान इनका अनुसरण किया जाता है। लेखांकन परिपाटियों का विकास लेखा पुस्तकों में अभिलेखन में समनुरूपता लाने के लिए वर्षों से नियमित एवं समनुरूप व्यवहार के द्वारा हुआ है। लेखांकन परिपाटियाँ विभिन्न वाणिज्यिक इकाइयों के बीच अथवा एक ही इकाई के विभिन्न अवधियों में लेखांकन आंकड़ों की तुलना करने में सहायक होता है। इनका विकास अनेकों वर्षों में हुआ है। लम्बी अवधि से जिन परिपाटियों का प्रयोग किया जा रहा है उनमें से सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिपाटियां है :

- समनुरूपता (Consistency) की परिपाटी
- पूर्ण प्रस्तुतीकरण (Full disclosure) की परिपाटी
- सारता (Materiality) की परिपाटी
- रूढ़िवादिता (Conservatism) की परिपाटी

3.2 समनुरूपता (Consistency) की परिपाटी

समनुरूपता की परिपाटी के अनुसार प्रत्येक वर्ष वित्तीय विवरणों को तैयार करने के लिए समान लेखांकन सिद्धान्तों का प्रयोग किया जाना चाहिए। जब किसी एक इकाई के वित्तीय विवरणों की तुलना की जाती है तो कुछ वर्षों के सारगर्भित परिणाम निकलते हैं। लेकिन यह तभी सम्भव है जबकि व्यावसाय जिन लेखांकन नीतियों एवं व्यवहारों को अपना रहा है वह काफी समय तक एक समान एवं समानुरूप हों। वित्तीय विवरणों को तैयार करने के लिए यदि अलग-अलग वर्षों के लिए अलग-अलग लेखा पद्धतियों एवं व्यवहारों का पालन किया जा रहा है तो परिणामों की तुलना संभव नहीं होगी।

साधारणतः एक व्यवसायी वर्ष–प्रतिवर्ष नीचे दिए गए सामान्य व्यवहार अथवा पद्धतियों का उपयोग करता है :

स्थायी सम्पत्तियों पर अवक्षयण लगाते समय अथवा बिना बिके स्टॉक का मूल्याँकन करते समय यदि कोई एक पद्धति अपनाई गई है तो इसे आगे आने वाले वर्षों में भी अपनाना चाहिए तभी वित्तीय विवरणों का विश्लेषण संभव है तथा उनकी तुलना

टिप्पणी

की जा सकती है। इसको और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है : स्थायी संपत्तियों पर अवक्षयण लगाते समय लेखाकार अवक्षयण की कोई एक विधि को अपना सकता है जैसे कि ह्रास मूल्य पद्धति अथवा सरल रेखा पद्धति।

इसी प्रकार से अन्तिम स्टॉक का मूल्यांकन वास्तविक लागत मूल्य अथवा बाजार मूल्य, जो भी कम है, पर किया जा सकता है। वैसे कीमती धातुओं जैसे कि सोना, हीरे, खनिज पदार्थ का मूल्यांकन केवल बाजार मूल्य पर किया जाता है।

समनुरूपता के प्रकार

समनुरूपता के निम्न तीन प्रकार हैं :

i. **लम्बत् समनुरूपता (एक ही संगठन) :** यह किसी भी संगठन के, किसी एक तिथि को, एक-दूसरे से संबंधित वित्तीय विवरणों के समूह के बीच पाया जाता है। यह उस समय होता है जबकि स्थायी सम्पत्तियों को लागत मूल्य पर दिखाया गया हो तथा संबन्धित आय विवरण में अवक्षयण को सम्पत्तियों की ऐतिहासिक लागत पर लगाया गया हो।

ii. **क्षैतिज समनुरूपता (समय के आधार पर) :** यह अनुरूपता एक ही इकाई के विभिन्न अवधियों के वित्तीय विवरणों के बीच पाई जाती है। इस प्रकार की अनुरूपता व्यवसाय के दो वर्षों के अर्थात् चालू वर्ष एवं पिछले वर्ष के निष्पादन की तुलना में सहायक होती है।

iii. **विमात्मक (Dimensional) समनुरूपता (एक ही व्यापार के दो संगठन) :** इस प्रकार की समनुरूपता दो अलग-अलग व्यावसायिक इकाइयों के विवरणों में पाई जाती है। यह समनुरूपता एक ही प्रकार के व्यवसाय के एक ही तिथि को दो इकाइयों के निष्पादन की तुलना करने में सहायक होती है।

अतः इस परिपाटी के अनुसार प्रतिवर्ष वित्तीय विवरणों को तैयार करने के लिए समान पद्धतियों को अपनाना चाहिए। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि एक बार यदि एक लेखांकन पद्धति का प्रयोग कर लिया तो उसे कभी बदला नहीं जा सकता। जब भी पद्धति में परिवर्तन आवश्यक समझा जाय तो उस वर्ष वित्तीय विवरणों में टिप्पणी देकर यह तथ्य उजागर कर देना चाहिए।

महत्व

- इससे वित्तीय विवरणों का तुलनात्मक विश्लेषण सुविधाजनक हो जाता है।
- यह स्थायी सम्पत्तियों पर अवक्षयण लगाने एवं स्टॉक के मूल्याँकन में एक रूपता को सुनिश्चित करता है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 3.1

उचित शब्द भरकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

i. समनुरूपता परिपाटी का अर्थ है कि ..... वित्तीय विवरणों को तैयार करने के लिए समान सिद्धांतों का उपयोग करना चाहिए।

ii. बिना बिके माल का मूल्यांकन लागत मूल्य अथवा ..... जो भी ..... पर किया जाता है।

iii. कीमती धातु जैसे कि सोना, खनिज एवं अन्य धातुओं का मूल्यांकन साधारणत ..... पर किया जाता है।

iv. ..... की परिपाटी के अनुसार वर्ष प्रतिवर्ष समान पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है।

3.3 पूर्ण प्रकटीकरण (FULL DISCLOSURE) की परिपाटी

पूर्ण प्रकटीकरण की परिपाटी के अनुसार व्यवसाय के वित्तीय विवरणों से जुड़े सभी सारपूर्ण एवं आवश्यक तथ्यों का पूरी तरह से उल्लेख होना चाहिए। पूर्ण प्रकटीकरण का अर्थ है कि लेखांकन सूचना का पूर्ण, उचित एवं पर्याप्त उल्लेख करना चाहिए। पर्याप्त का अर्थ है कि भली भांति जितनी आवश्यक है उतनी सूचना को प्रकट करना। उचित उपयोगकर्ताओं के साथ समानता के व्यवहार की ओर इंगित करता है। सम्पूर्ण का आशय है पूर्ण एवं विस्तृत रूप में सूचना का प्रस्तुतिकरण। इस प्रकार से पूर्ण प्रकटीकरण की परिपाटी के अनुसार प्रत्येक वित्तीय विवरण में सभी आवश्यक सूचनाओं को दर्शाना चाहिए। आइए अब इसे व्यवसाय के सन्दर्भ में देखें। व्यवसाय उन सभी पक्षों को वित्तीय सूचना प्रदान करते हैं जिनका इसमें हित है जैसे कि निवेशक, ऋणदाता, लेनदार, अंश धारक आदि। अंशधारी व्यवसाय की लाभप्रदता तथा लेनदार व्यवसाय की शोधनक्षमता के सम्बन्ध में जानना चाहेंगे। इसी प्रकार से अन्य पक्ष भी अपनी–अपनी आवश्यकता के अनुसार वित्तीय सूचना में रुचि रखना चाहेंगे। यह तभी सम्भव है जबकि वित्तीय विवरण सभी आवश्यक सूचना को पूर्ण, उचित एवं पर्याप्त रूप से दिखाएगा।

आइए एक उदाहरण लेते है। माना कि शुद्ध बिक्री ₹ 1,50,000 है। उपयोगकर्ताओं के लिए सकल विक्रय राशि के सम्बन्ध में जानना अधिक महत्वपूर्ण है जो कि माना ₹ 2,00,000 है तथा विक्रय वापसी ₹ 50,000। विक्रय वापसी 25% है इसको प्रकट करने से उपयोगकर्ता वास्तविक विक्रय स्थिति को जान सकते हैं। इसीलिए जो भी विस्तृत जानकारी उपलब्ध है उसे ईमानदारी से उपलब्ध करा देना चाहिए। वित्तीय विवरण में अतिरिक्त जानकारी भी दी जा सकती है। उदाहरण के लिए स्थिति विवरण में संपत्तियों के मूल्यांकन के आधार को स्पष्ट कर देना चाहिए। यह सम्पत्तियाँ हैं

टिप्पणी

निवेश, स्टॉक, भूमि एवं भवन आदि। इसी प्रकार से अवक्षयण की विधि में कोई परिवर्तन किया है या फिर अप्राप्य ऋणों के प्रावधान के सम्बन्ध में या किसी संचय के उपयोग के सम्बन्ध में कोई परिवर्तन किया है तो इसे स्थिति विवरण में स्पष्ट रूप से दिखा देना चाहिए। इस प्रकार से लेखांकन के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए, व्यवसाय के सभी लेन-देनों तथा लेखांकन नीतियों, विधियों तथा कार्य प्रक्रियाओं में किसी भी परिवर्तन को लेखांकन में पूर्ण रूप से अभिलेखित तथा प्रदर्शित किया जाना चाहिए।

सारपूर्ण लेखांकन सूचना के सही रूप से प्रस्तुत करने को सुनिश्चित करने के लिए कंपनी अधिनियम 1956 की सारणी VI में कम्पनी के लाभ–हानि खाता एवं स्थिति विवरण बनाने का प्रारूप दिया गया है। प्रत्येक कम्पनी के लिए प्रारूप का पालन करना अनिवार्य है। विनियामक संगठन जैसे कि भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (SEBI) ने भी प्रत्येक पंजीकृत कम्पनी के लिए पूर्ण प्रकटीकरण अनिवार्य कर दिया है।

महत्व

- इससे विभिन्न व्यावसायिक इकाइयों के लिए उनके वित्तीय विवरणों की अर्थपूर्ण तुलना करने में सहायता मिलेगी।
- यह एक ही व्यावसायिक इकाई को अपने विभिन्न वित्तीय विवरणों की तुलना करने में सहायक हो सकता है।
- यह परिपाटी निवेशक एवं अंशधारियों को निवेश सम्बन्धित निर्णय लेने में बहुत अधिक सहायक होती है।
- पूर्ण प्रकटीकरण की परिपाटी विश्वसनीय सूचना देती है।

पाठगत प्रश्न 3.2

उचित शब्द भरकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

i. अंशधारी व्यवसाय की ..... के बारे में जानना चाहता है।

ii. पूर्ण प्रकटीकरण परिपाटी के अनुसार लेखांकन सूचना का पूर्ण ..... एवं ..... प्रकटीकरण होना चाहिए।

iii. लेनदार व्यवसाय की ..... जानने में इच्छुक होते हैं।

iv. सभी आवश्यक सारपूर्ण तथ्यों को वित्तीय विवरणों में ..... करना चाहिए।

v. पूर्ण प्रकटीकरण परिपाटी ..... सूचनाएँ प्रदान करती हैं।

टिप्पणी

3.4 सारता (MATERTALITY) की परिपाटी

सारता की परिपाटी के अनुसार वित्तीय विवरणों को अर्थपूर्ण बनाने के लिए लेखांकन सूचना के उपयोगकर्ताओं को केवल सारपूर्ण तथ्य अर्थात् महत्वपूर्ण एवं आवश्यक सूचना ही प्रदान की जानी चाहिए। यहां प्रश्न यह उठता है कि किन तथ्यों को सारपूर्ण तथ्य या महत्वपूर्ण तथ्य कहेंगे यह निर्भर करेगा कि उस तथ्य की प्रकृति क्या है तथा उसमें निहित धन राशि कितनी है। कोई भी ऐसा तर्कसंगत तथ्य जो सूचना के उपयोगकर्त्ता के निर्णय को प्रभावित करने में सक्षम है वह सार पूर्ण तथ्य माना जाएगा।

उदाहरण के लिए माना एक व्यवसायी इलैक्ट्रोनिक वस्तुओं का व्यापार कर रहा है। वह अपने व्यवसाय के लिए टी.वी, रेफ्रीजरेटर, कपड़े धोने की मशीन, कम्प्यूटर आदि का क्रय करता है। इन वस्तुओं के क्रय में वह अपनी अधिकांश पूँजी का उपयोग कर लेता है। अब क्योंकि यह वस्तुएँ महत्वपूर्ण वस्तुए हैं इसलिए लेखा पुस्तकों में इनका अभिलेखन विस्तार से किया जाना चाहिए। अब वह दिन–प्रतिदिन के कार्यालयी कार्य के लिए पैन, पेन्सिल, माचिस, अगरबत्ती आदि खरीदता है। इन पर वह पूँजी का बहुत थोड़ा भाग खर्च करेगा। वैसे भी प्रत्येक पेन, पेन्सिल, माचिस तथा अन्य छोटी-छोटी वस्तुओं का पूरा ब्योरा रखना महत्वपूर्ण नहीं माना जाता। यह वस्तुएँ कम महत्व रखती है इसलिए इनका अभिलेखन अलग से किया जाता है। अतः जिन मदों का विस्तृत रूप से अभिलेखन महत्वपूर्ण है। वे सारपूर्ण तथा महत्वपूर्ण मदें कहलाएँगी। जो मदें कम महत्व रखती हैं वह सारहीन तथ्य अथवा महत्वहीन मदें कहलाएँगी।

अतः इस परिपाटी के अनुसार महत्वपूर्ण मदों को उनके अपने शीर्षकों के अन्तर्गत लिखा जाता है जबकि सारहीन एवं महत्वहीन लेन-देनो को इकट्ठा कर एक अलग लेखांकन शीर्षक के अन्तर्गत लिखना चाहिए।

महत्व

- यह गणना में गलतियों को न्यूनतम रखने में सहायक होता है।
- यह वित्तीय विवरणों को अर्थपूर्ण बनाने में सहायता करता है।
- इससे समय एवं साधनों की बचत होती है।

पाठगत प्रश्न 3.4

उचित शब्द भरकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

i. ..... परिपाटी के अनुसार वित्तीय विवरणों को अधिक अर्थपूर्ण बनाने के लिए उपयोगकर्ताओं को केवल सार्थक एवं महत्वपूर्ण मदों की आपूर्ति की जाती है।

टिप्पणी

ii. सारता परिपाटी के अनुसार गैर-महत्वपूर्ण मदों को ..... के अधीन प्रकट करना चाहिए।

iii. ..... परिपाटी के कारण लेखाकार एवं प्रबन्धक महत्वपूर्ण सारपूर्ण मदों पर ध्यान देते हैं।

iv. ..... का अर्थ है वह सूचना जो कि उपयोगकर्ता के निर्णय को प्रभावित करेगी।

3.5 रूढ़िवादिता (CONSERVATISM) की परिपाटी

यह परिपाटी इस सिद्धान्त पर आधारित है कि "लाभ की आशा न करें, सभी हानियों के लिए प्रावधान करें"। यह लेखा पुस्तकों में अभिलेखन के लिए दिशा प्रदान करती है। लाभ दर्शाने में यह सावधानी से चलने की नीति पर आधारित है। इस परिपाटी का मुख्य उद्देश्य न्यूनतम लाभ दर्शाना है। लाभ अनावश्यक रूप से बढ़े हुए न दिखें। यदि वास्तविक लाभ से अधिक लाभ उल्लिखित होगा तो पूँजी में से लाभांशों का वितरण करना पड़ेगा। यह न तो उचित नीति मानी जाएगी तथा इससे व्यापार की पूँजी में भी कमी आएगी।

इस परिपाटी के अनुसार यह स्पष्ट है कि समस्त लाभों का अभिलेखन लेखा–पुस्तकों में तब तक नहीं करना चाहिए जब तक की वह अर्जित न हो लेकिन वह सभी हानियाँ जिनकी यदि दूरस्थ संभावना भी हो तो उनके लिए लेखा पुस्तकों में पर्याप्त प्रावधान कर लेना चाहिए। अन्तिम स्टॉक का मूल्यांकन वास्तविक मूल्य व बाजार मूल्य में जो कम है उस पर करना तथा संदिग्ध ऋणों के लिए आरम्भ से ही प्रावधान करना, देनदारों को छूट के लिये प्रावधान करना, अमूर्त सम्पत्तियों जैसे ख्याति, पेटेंट आदि का सामयिक अपलेखन आदि इसके उदाहरण है। रूढ़िवादिता की परिपाटी अनिश्चितता एवं शंका की स्थिति में बहुत उपयोगी रहती है।

महत्व

- यह वास्तविक लाभ के निर्धारण में सहायक होती है।
- यह अनिश्चितता एवं शंका की स्थिति में उपयोगी रहती है।
- यह व्यवसाय की पूँजी की स्थिरता में सहायक होती है।

पाठगत प्रश्न 3.5

निम्नलिखित परिस्थितियों में अपना निर्णय दीजिए :

i. एक व्यवसाय के पास वर्ष के अंत में बिना बिका स्टाक है। लागत कीमत ₹2,00,000 तथा बाजार मूल्य ₹ 2,50,000 है। किस मूल्य पर बिना बिके स्टाक का अभिलेखन किया जाय?

टिप्पणी

ii. यदि उपरोक्त (i) स्थिति में लागत कीमत ₹ 2,10,000 है तो आपका निर्णय क्या होगा?

iii. एक व्यवसाय का अनुमान है कि उसके देनदारों में से शायद वह ₹ 50,000 प्राप्त करने में असमर्थ होगा। क्या वह इन लेन-देनों का लेखा पुस्तकों में लेखा करेगा तथा किस मूल्य पर करेगा?

3.6 सामान्यतः मान्य लेखांकन सिद्धान्त (GAAP) एवं लेखांकन मानक (ACCOUNTING STANDARDS)

विश्व भर में लेखांकन अभिलेखों में एकरूपता एवं समनुरूपता बनाए रखने के लिए कुछ नियमों एवं सिद्धान्तों का विकास किया गया है जो सामान्य रूप से लेखांकन पेशे में स्वीकृत हैं। यह नियम/सिद्धान्त कई नामों से पुकारे जाते हैं जैसे कि सिद्धान्त, अवधारणाएँ, परिपाटियां, संशोधक सिद्धान्त, परिकल्पनाएँ। इन नियमों/सिद्धान्तों का आंकलन उनकी सामान्य रूप से स्वीकार्यता से किया जाता है न कि उनकी सार्वभौमिक स्वीकार्यता से। इसीलिए यह सामान्यतः मान्य लेखांकन सिद्धान्तों के नाम से प्रसिद्ध हैं। सामान्यतः मान्य शब्द का अर्थ है कि इन सिद्धान्तों को पेशेवर लेखांकन निकायों से समर्थन मिलना चाहिए। सामान्य मान्य लेखांकन सिद्धान्त वह नियम अथवा दिशा निर्देश हैं जिन्हें वित्तीय विवरणों में व्यावसायिक लेन-देनों के अभिलेखन एवं सूचित करने में अपनाया जाता है। इन सिद्धान्तों का विकास लम्बी अवधि में पिछले अनुभव एवं रीति-रिवाज आदि के आधार पर हुआ है। इन सिद्धांतों को अवधारणा एवं परिपाटी भी कहते हैं जिनका अध्ययन हम पिछले पाठ में कर चुके हैं।

लेखांकन मानक (Accounting Standard)

मानक शब्द इस नियमावली के लिए प्रयुक्त होता है जो मूल्यांकन के लिए दिशा निर्देश एवं मानदंड के रूप में प्रयुक्त होती है। दिशा–निर्देश के रूप में लेखांकन मानक लेखांकन के समान व्यवहार एवं समान तकनीक प्रदान करते हैं। सामान्य नियम के रूप में लेखांकन मानक सभी निगमत निकायों पर लागू होते हैं। यह मानक में निश्चित तिथि से **परिचालित** हो जाते हैं। इंस्टिट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकांउंटेंट्स ऑफ इण्डिया ने अप्रैल 1977 में लेखांकन मानकों को विकसित करने के लिए लेखांकन मानक बोर्ड (ASB) की स्थापना की। जबकि इन्टरनेशनल एकाउंटिंग स्टैंडर्ड कमेटी (IASC) की स्थापना 1973 में हुई जिसका मुख्यालय लंदन (यूके) में है।

दि एकाउंटिंग स्टैंडर्ड्स बोर्ड को निम्नलिखित को ध्यान में रखते हुए महत्वपूर्ण लेखांकन मामलों के लिए मानक निर्धारण करने का दायित्व सौंपा गया।

(क) अन्तर्राष्ट्रीय विकास एवं

(ख) भारत में कानूनी आवश्यकताएँ

टिप्पणी

ए.एस.बी. (ASB) का मुख्य कार्य उन क्षेत्रों की पहचान करना है जहाँ लेखांकन में समरूपता की आवश्यकता है तथा सरकारी सार्वजनिक क्षेत्र के निकाय, औद्योगिक एवं अन्य संगठनों के प्रतिनिधियों के साथ विचार–विमर्श कर मानकों का विकास करना एवं रूपरेखा तैयार करना है।

प्रारम्भ के वर्षों में यह मानक संस्तुति (Recommendatory) प्रकृति के होते हैं। मानकों के लाभ एवं इनकी उपयुक्तता के सम्बन्ध में जागरूकता पैदा हो जाने के पश्चात् इन लेखांकन मानकों को सभी कंपनियों के लिए कानूनी रूप से अनिवार्य करने के लिए कदम उठाए जाते हैं। यदि कंपनियाँ इनका पालन नहीं करती हैं तो उन्हें इससे विचलन का कारण तथा उसके वित्तीय प्रभाव का उल्लेख करना होगा।

आज तक आई.ए.एस.सी. (IASC) ने 40 मानक तय किए हैं जबकि आई.सी.ए.आई. (ICAI) ने अब तक 29 लेखांकन मानकों की घोषणा की है जो इस प्रकार हैं :

ए.एस. 1 लेखांकन सम्बन्धी नीतियों को उजागर करना (जनवरी 1979) : यह मानक वित्तीय विवरणों में महत्वपूर्ण लेखांकन नीतियों को घोषित करने के सम्बन्ध में है।

ए.एस. 2 स्टॉक का मूल्यांकन (जून 1981) यह मानक वित्तीय विवरणों के लिए स्टॉक के मूल्यांकन के सिद्धान्तों के सम्बन्ध में है।

ए.एस. 3 (संशोधित) रोकड़ प्रवाह विवरण (जून 1981, मार्च 1997 में संशोधित) : यह मानक उस वित्तीय विवरण की व्याख्या करता है जो व्यवसाय के निर्धारित अवधि के स्रोत एवं उपयोग का संक्षिप्त स्वरूप है।

ए.एस. 4 स्थिति विवरण की तिथि के पश्चात् की आकस्मिक परिस्थितियों एवं घटनाओं का घटित होना (नवम्बर 1982, अप्रैल 1995 में संशोधित) यह मानक स्थिति विवरण की तिथि के पश्चात् घटित आकस्मिक स्थितियों एवं घटनाओं से निपटने के सम्बन्ध में है।

ए.एस. 5 निश्चित समय के शुद्ध लाभ अथवा हानि, समय से पहले (स्थिति विवरण की तिथि से पहले की अवधि) की मदें तथा लेखांकन नीतियों में परिवर्तन (नवम्बर 1982, फरवरी 1997 में संशोधित)। यह मानक पूर्व की अवधि के वित्तीय विवरण में किये गये लेख, असामान्य मदें तथा लेखांकन नीतियों में परिवर्तनों को परिभाषित करता है।

ए.एस. 6 अवक्षयण लेखांकन (नवम्बर 1982) यह मानक सभी अवक्षयण योग्य परिसम्पत्तियों पर लागू होता है। लेकिन यह जंगल, बागान एवं प्राकृतिक संसाधन एवं नष्ट हो रही सम्पत्तियों पर लागू नहीं होता है।

टिप्पणी

ए.एस. 7 निर्माण अनुबंधों का लेखांकन (दिसम्बर 1983, अप्रैल 2003 में संशोधित) यह मानक ठेकेदारों के वित्तीय विवरणों में निर्माण ठेकों के लेखांकन पर लागू होता है।

ए.एस. 8 अनुसंधान एवं विकास के सम्बन्ध में लेखांकन (जनवरी 1985) : यह मानक वित्तीय विवरणों में अनुसंधान एवं विकास की लागत को कैसे दर्शाया जाय इस सम्बन्ध में दिशा निर्देश देता है।

ए.एस. 9 आगम को मान्यता (नवम्बर 1985) : यह मानक बताता है कि व्यवसाय के लाभ-हानि विवरण के लिए आगम की पहचान कैसे की जाय।

ए.एस. 10 स्थायी सम्पत्तियों का लेखांकन (नवम्बर 1991) यह मानक स्थायी सम्पत्तियों को विभिन्न वर्गों में बांटने को मान्यता देने के सम्बन्ध में है। यह सम्पत्तियाँ हैं भूमि, भवन, प्लांट एवं मशीनरी, वाहन, फर्नीचर, उपहार, ख्याति, पेटेंट, व्यापार एवं डिजाइंस,

ए.एस. 11 विदेशी विनिमय दरों में परिवर्तन के प्रभाव का लेखांकन (अगस्त 1991 एवं अगस्त 1993 में संशोधित) : यह मानक विदेशी विनिमय दरों में परिवर्तन के प्रभाव के लेखांकन से सम्बन्धित मामलों का समाधान करता है।

ए.एस. 12 सरकारी सहायता का लेखांकन (अप्रैल 1994) : यह मानक सरकारी सहायता का लेखांकन कैसे किया जाय यह तय करता है।

ए.एस. 13 निवेश से सम्बन्धित लेखांकन (सितम्बर 1994) यह मानक वित्तीय विवरणों में निवेश के लेखांकन के सम्बन्ध में है। इनमें सम्मिलित हैं निवेश का वर्गीकरण, प्रारम्भिक पहचान की लागत का निर्धारण, बिक्री एवं पुनः वर्गीकरण।

ए.एस 14 एकीकरण का लेखांकन (Accounting for amalgamation) (अक्टूबर 1994) यह मानक मार्गदर्शन करता है कि कम्पनियों के एकीकरण के समय ख्याति अथवा संचय का लेखांकन कैसे किया जाय।

ए.एस. 15 नियोक्ता के वित्तीय विवरणों में सेवा निवृत्ति पर लाभों का लेखांकन (जनवरी 1995) : यह मानक नियोक्ता के वित्तीय विवरणों में सेवा निवृत्ति पर दिए जाने वाले लाभों के लेखांकन के लिए हैं।

ए.एस 16 उधार लेने की लागत (अप्रैल 2000) : यह मानक स्थायी सम्पत्तियों के क्रय करने के लिए ऋण लेने पर ब्याज के पूँजीकरण के उपयोगों के लिए है।

टिप्पणी

ए.एस. 17 खंड रिपोर्ट करना (Segment reporting) (अक्टूबर 2000) यह मानक उन कम्पनियों पर लागू होता है जिनका वार्षिक आवर्त 50 करोड़ रु. अथवा उससे अधिक है। इन कम्पनियों को वित्तीय विवरण एवं संगठित वित्तीय विवरण प्रस्तुत करने होते हैं

ए.एस. 18 सम्बन्धित पक्ष प्रकटीकरण (Related party disclosures) (अक्टूबर 2000 संशोधित 1 जुलाई, 2003) : यह मानक अपेक्षा करता है कि उद्यम एवं सम्बन्धित पक्षों के बीच लेन-देनों को उजागर किया जाय।

ए.एस. 19 पट्टाधिकार (Leases) (जनवरी 2001) यह मानक पट्टाधिकार समझौतों लेन-देनों के लेखा करने के दिशा–निर्देश देता है।

ए.एस. 20 प्रतिअंश आय (अप्रैल 2001) : यह मानक निर्धारित करता है कि प्रति अंश आय की कैसे गणना की जाय तथा कैसे उसे प्रस्तुत किया जाय।

ए.एस 21 एकीकृत (Consolidated) वित्तीय विवरण (अप्रैल 2001) यह मानक निर्धारित करता है कि किसी समूह की क्रियाओं के सम्बन्ध में सूचना उपलब्ध कराने के लिए एकीकृत वित्तीय विवरण कैसे तैयार किए जाएँ।

ए.एस 22 आय पर कर का लेखांकन (अप्रैल 2001) : यह मानक निश्चित करता है कि किसी आगम के लिए कर का निर्धारण कैसे किया जाय।

ए.एस. 23 सहयोगी कम्पनी में निवेश का एकीकृत वित्तीय विवरणों में लेखांकन (जुलाई 2001) यह मानक निश्चित करता है कि एकीकृत वित्तीय विवरण तैयार करने में किन सिद्धांतों एवं प्रक्रिया का अनुसरण किया जाय।

ए.एस. 24 परिचालन बन्द (Discontinued operating) (फरवरी 2002) : यह मानक निश्चित करता है कि किसी इकाई के परिचालन के बंद हो जाने तथा कुछ क्रियाओं के चलते रहने के सम्बन्ध में क्या सिद्धान्त हैं।

ए.एस. 25 अन्तरिम वित्तीय रिपोर्ट करना (फरवरी 2002) : यह मानक बताता है कि अन्तरिम वित्तीय रिपोर्ट की न्यूनतम विषय–वस्तु क्या होनी चाहिए।

ए.एस 26 अमूर्त सम्पत्तियाँ (फरवरी 2002) : यह मानक निर्धारित करता है कि उन अमूर्त सम्पतियों का लेखांकन किस प्रकार से होना चाहिए जो किसी अन्य विशिष्ट लेखांकन मानक के अन्तर्गत नहीं आती हैं।

ए.एस. 27 संयुक्त उपक्रम में हितों का वित्तीय प्रतिवेदन (फरवरी 2002) यह मानक संयुक्त उपक्रम में हितों के लेखांकन के लिए सिद्धान्त एवं प्रक्रिया को निश्चित करता है।

टिप्पणी

ए.एस. 28 परिसम्पत्तियों की क्षति (2004) : यह मानक प्रक्रिया को निर्धारित करता है निश्चित करता है कि किसी भी परिसम्पत्ति को इसके मूल्य से अधिक पर न दिखाया जाय तथा कब किसी सम्पत्ति को अयोग्य ठहराया जाय।

ए.एस. 29 आकस्मिक देयताओं एवं परिसम्पत्तियों के लिए प्रावधान (2004) : यह मानक प्रावधान, आकस्मिक देयताओं एवं आकस्मिक परिसम्पत्तियों इन तीन क्षेत्रों में मापन एवं पहचान के आधार तय करता है।

ASB द्वारा जारी ऊपर दिये सभी मानकों की मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंज में सूचिबद्ध कम्पनियों एवं सार्वजनिक क्षेत्र एवं निजी क्षेत्र के अन्य बड़े वाणिज्यिक, औद्योगिक एवं व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के उपयोग के लिए अनुशंसा की गई है।

पाठगत प्रश्न 3.5

उचित शब्द भरकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

i. ए.एस. 1 का सम्बन्ध ..... से है।

ii. ए.एस. 29 का सम्बन्ध ..... से है।

iii. ए.एस. 26 का सम्बन्ध ..... से है।

iv. ए.एस. 20 का सम्बन्ध ..... से है।

v. ए.एस. 21 का सम्बन्ध ..... से है।

vi. ए.एस. 22 का सम्बन्ध ..... से है।

vii. GAAP का अर्थ है .....

viii. एकाउन्टिंग स्टैंडर्ड बोर्ड (ASB) की स्थापना ..... में की गई थी।

ix. इन्टरनेशनल अकाउंटिंग स्टैंडर्ड कमेटी की स्थापना ..... में की गई थी।

x. ए.एस. 2 का सम्बन्ध ..... से है।

आपने क्या सीखा

- लेखांकन परिपाटियाँ वह सामान्य व्यवहार हैं जिनका अनुसरण व्यवसाय की लेखांकन सूचना के अभिलेखन एवं प्रस्तुतिकरण में किया जाता है।
- समनुरूपता की परिपाटी के अनुसार वित्तीय विवरणों के निर्माण में प्रतिवर्ष एक जैसी लेखांकन विधियों को अपनाया जाना चाहिए।

टिप्पणी

- प्रकटीकरण की परिपाटी के अनुसार वित्तीय विवरणों में सभी संबंधित महत्वपूर्ण एवं सारपूर्ण तथ्यों को पूर्णतया प्रकट करना चाहिए।
- सारता की परिपाटी के अनुसार वित्तीय विवरणों को और अधिक अर्थपूर्ण बनाने के लिए उनमें केवल महत्वपूर्ण और सम्बन्धित सूचना ही दिखाई जानी चाहिए।
- रूढ़िवादिता की परिपाटी के अनुसार लाभ का तब तक अभिलेखन नहीं किया जाना चाहिये जब तब कि वह वसूल न हो जाय। लेकिन यदि व्यवसाय में निकट भविष्य में कोई हानि होने की सम्भावना है तो लेखा पुस्तकों में प्रावधान उसके लिये किया जाना चाहिए।
- सामान्य रूप से स्वीकृत लेखांकन सिद्धान्तों से अभिप्रायः उन नियमों एवं दिशा निर्देशों से है जिनका पालन व्यावसायिक लेन-देनों के अभिलेखन एवं प्रतिवेदन में किया जाता है। इससे वित्तीय विवरणों के निर्माण एवं प्रस्तुतिकरण में एकरूपता आती है।

पाठान्त प्रश्न

1. उदाहरण के साथ समनुरूपता की परिपाटी को समझाइए।
2. उदाहरण के साथ लेखांकन की रूढ़िवादिता की परिपाटी को समझाइए।
3. लेखांकन मानकों से आप क्या समझते हैं ? एकांउटिंग स्टैंडर्ड्स बोर्ड (ASB) द्वारा समय–समय पर जारी लेखांकन मानकों की गणना कीजिए।
4. सारता की परिपाटी को समझाइए।
5. उदाहरण देकर लेखांकन की पूर्ण प्रकटीकरण की परिपाटी को समझाइए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

3.1 (i) वर्ष प्रति वर्ष (ii) बाजार मूल्य, कम हो
(iii) बाजार मूल्य (iv) समनुरूपता

3.2 (i) लाभप्रदता (ii) उचित, पर्याप्त (iii) शोधन क्षमता
(iv) प्रकट (v) विश्वसनीय

3.3 (i) सारता (ii) अलग शीर्षक (iii) सारता (iv) सारगर्भित तथ्य

3.4 (i) लागत मूल्य अर्थात् ₹ 2,00,000 (ii) लागत मूल्य अर्थात् ₹ 2,10,000
(iii) हाँ, ₹ 50,000 का डूबत ऋण

टिप्पणी

3.5

(i) लेखांकन नीतियों का प्रकटीकरण
(ii) प्रावधान, संदिग्ध देयताएँ एवं संदिग्ध संपत्तियाँ
(iii) अमूर्त सम्पत्तियां
(iv) प्रति अंश आय
(v) एकीकृत वित्तीय विवरण
(vi) आय का लेखांकन
(vii) सामान्य रूप से मान्य लेखांकन सिद्धांत
(viii) अप्रैल, 1977
(ix) 1973
(x) स्टॉक मूल्यांकन

क्रियाकलाप

कुछ व्यावसायिक इकाइयों में जाएँ तथा उनके लेखाकारों से पूछें कि लेखांकन के समय वह निम्नलिखित को कैसे हल करते हैं?

1. लेखांकन वर्ष के अंत में स्टॉक का मूल्यांकन।
2. वह अपने खातों को कितने समय के अन्तराल पर बंद करते हैं?
3. पिछले तीन-चार वर्षों में अवक्षयण की कौन सी पद्धतियाँ प्रयोग की हैं?
4. आलसी अभिवृति अथवा संगठन के प्रति वफादारी के कारण क्या कभी उन्हें हानि उठानी पड़ी है अथवा उन्हें लाभ अर्जित हुआ है?

उत्तर को पूर्ण करें तथा परिणाम निकालें कि क्या वह किसी लेखांकन अवधारणा का अनुसरण कर रहे हैं? यदि उत्तर हाँ है तो लेखांकन अवधारणा/परिपाटी के नाम लिखें।